## विचार बिन्दु

**विद्या के अलावा और कोई ज्ञान नहीं है। –थामस फुलर**

# वनानुभव

प्रकृति-अनुभव और वनानुभव चिकित्सा का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह आयुर्वेद की एक श्रेष्ठ गैर-औषधीय चिकित्सा है जिस पर समकालीन शोध भी बहुत समृद्ध है। हरियाली, प्राकृतिक वातावरण, वनों और उपवनों में प्रकृति-अनुभव या दीर्घकालिक जुड़ाव का प्रसन्नता में योगदान पर पूर्व में यहाँ प्रमाण-आधारित ठोस विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था। परन्तु क्या यह हरियाली में किया गया व्यायाम और योग तुलनात्मक रूप से बेहतर स्वास्थ्य भी प्रदान करता है? वर्ष 2022 में प्रकाशित शोध को समाहित कर आज की चर्चा पुनः इसी विषय पर है।

जैसा कि पूर्व में बताया गया था, संहिताओं में स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार दोनों के लिये ऐसे अनेक सन्दर्भ हैं (देखें, च.चि.3.260-266; च.चि. 2/3, 26-30, च.चि. 4.106-109; च.वि. 6.17, सु.उ. 47.55-57 आदि)। उक्त सभी सन्दर्भ केवल उदाहरणार्थ और प्राचीनता दर्शित करने के उद्देश्य से उद्धृत किये गये हैं। समकालीन शोध में पिछले कई दशकों से विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपनी विधा के अनुसार इस बात की ओर ध्यान खींचा है कि प्रकृति से जुड़ने और मानव स्वास्थ्य में सुधार के बीच सकारात्मक संबंध है। यह आम समझ की बात है कि प्रकृति और पर्यावरण के सानिध्य में समय बिताना हमारे लिये स्वाभाविक रूप से अच्छा हो सकता है। प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों, प्राचीनकाल से चली आ रही सांस्कृतिक परम्पराओं और चिकित्सा पद्धतियों में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि मानव सभ्यता का अपने स्वास्थ्य, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के लिये प्रकृति के साथ अन्योन्याश्रित जुड़ाव रहा है।

जहाँ तक हरियाली का शारीरिक और मनोरोगों को रोकने में योगदान है उस पर बहुत शोध है और उसका सम्पूर्ण विश्लेषण यहाँ देना संभव नहीं है। इस विषय में एक बेहद उपयोगी पुस्तक द एक्सपीरियंस ऑफ़ नेचर-अ साइकोलॉजिकल पर्सपेक्टिव वर्ष 1989 में प्रकाशित हुई थी। राचेलकपलान और स्टेफेनकपलान की यह पुस्तक इस विषय में विश्व की सर्वाधिक संदर्भित पुस्तक है जिसे लगभग 8000 प्रकाशनों में संदर्भित किया गया है। प्राकृतिक वातावरण, लोगों और उनके बीच के संबंधों का एक प्रमाण-आधारित लेखा-जोखा इस पुस्तक में है। लेखकों ने यह समझने की कोशिश की है कि लोग प्रकृति का अनुभव कैसे करते हैं और वे किस प्रकार के प्राकृतिक वातावरण पसंद करते हैं, वे जंगल के अनुभवों से क्या मनोवैज्ञानिक लाभ उठाते हैं, और हमारे आसपास के उद्यान लोगों के लिये क्यों महत्वपूर्ण हैं।

आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साम्य सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि मानव और संसार एक समान हैं (च.शा.5.3: पुरुषोऽयंलोकसम्मितः) इस सिद्धांत के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा-सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता (च.शा.5.3: लोकपुरुषयोः सामान्यम्) होने से सामान्य-विशेष का सिद्धांत कार्य करता है। अर्थात सामान भावों को सामान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और असमान भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है या अकल तभी आती है जब स्वयं के अंदर प्रकृति को व प्रकृति के अंदर स्वयं को देखा जाये (च.शा.5.7): सर्वलोकमात्मन्यात्मानं च सर्वलोकेसममनुपश्यतः सत्या बुद्धिः समुत्पद्यते। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमें छः धातुयें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं (च.शा.5.7): षड्धातुसमुदायोहि सामान्यतः सर्वलोकः। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल है।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि ऐसा नहीं है कि प्रकृति के सभी आयाम स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित ही हों। कई प्राकृतिक स्थल मानव में अकेले डर पैदा कर सकते हैं। जो हवा, पानी और मिट्टी स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयुक्त होती है, वही प्रदूषित होने या प्राकृतिक आपदाओं के स्वरुप में आने पर स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकती हैं। प्राकृतिक वातावरण के जो प्राणी बहुत सुन्दर लगते हैं उनमें से बहुत हिंसक भी हो सकते हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुये प्रकृति-अनुभव अपने अन्य रूपों में हमारे स्वास्थ्य की स्थिति को निर्धारित करते हैं। इस दृष्टिकोण से प्रकृति और पर्यावरण को निहारना, प्राकृतिक वातावरण में घूमना-फिरना स्वास्थ्यकर होता है।

प्रकृति-अनुभव किन कारणों से हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है? या अन्य शब्दों में कहें तो प्रकृति से जुड़ाव के स्वास्थ्यकर होने की मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन क्या है? अनेक अध्ययनों के प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि प्रकृति का मानव शरीर और मन पर स्वास्थ्यकर प्रभाव स्वास्थ्य के विविध आयामों को बेहतर करने में प्राकृतिक वातावरणों की भूमिका के कारण होता है। उदाहरण के लिये प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य में सुधार की मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन को मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद में कमी, मन की प्रसन्नता में बढ़ोत्तरी, अच्छीनिद्रा, मनोहारी अनुभूति, दर्द-नियंत्रण, बेहतर सामाजिक संपर्क, व्यायाम में बढ़ोत्तरी, हृदय रोगों में कमी, प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार आदि के प्रकाश में देखा जा सकता है। वनानुभव-चिकित्सा (वनों में घूम-फिर कर प्रकृति का अनुभव करना) इम्यूनिटी भी बढ़ाती है (देखें, वाय. चे इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(16), 2021)।

शहरों में हरियाली से स्वास्थ्य लाभ के बारे में वर्ष 1800 के बाद से कई छिटपुट अध्ययन मिलते हैं और शहरी विकास में इन्हें शामिल करने के प्रयास भी दुनिया भर में हुये है। इन सब अध्ययनों में एक सन्देश मिल रहा था कि हरियाली को अनुभूत करना या हरियाली का एक्सपोज़र स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है, परन्तु व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-एनालिसिस अब आना शुरू हुये हैं। हाल ही में हरियाली से मिलाने वाले लगभग 100 प्रकार के स्वास्थ्य-लाभ के निष्कर्षों वाले 143 अध्ययनों को शामिल कर एक मेटा-एनालिसिस की गयी। इससे कई रोचक परिणाम मिले। जैसे जैसे हरियाली के साथ जुड़ाव बढ़ा वैसे वैसे लार के कोर्टिसोल, हृदय गति, व डायस्टोलिक रक्तचाप में कमी पायी गयी। एचडीएल कोलेस्ट्रॉल व हृदय गति की परिवर्तनशीलता में बेहतरी हुई। समय-पूर्व प्रसव-जोखिम, मधुमेह, तथा समस्त-कारण मृत्यु दर (आल-कॉजमोर्टेलिटी) और हृदय रोग मृत्यु दर में भी कमी पाई गयी। स्ट्रोक, उच्च रक्तचाप, डिस्लिपीडेमिया, अस्थमा, और कोरोनरी हृदय रोग की घटनाओं में भी कमी होती गयी। अलग-अलग अध्ययनों को देखने पर यह भी स्पष्ट हुआ कि स्वास्थ्य परिणामों में 66.7 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक बेहतरी हुई है। इनमें न्यूरोलॉजिकल, कैंसर, व श्वसन रोगों से मृत्यु दर में कमी भी पाई गयी (देखें, सी. टोहिग-बेनेट, ए. जोन्स, एनवायर्नमेंटल रिसर्च, 166: 628-637, 2018)।

> **चूंकि प्रतिदिन व्यायाम और योग करना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है अतः व्यायाम और योग वनों, हरे-भरे स्थलों, बाग-बगीचों, नदी या झील के समीप किया जाये तो शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिये अधिक उपयोगी है। बच्चों को भी वनानुभव और प्रकृति-अनुभव कराइये। हरियाली से जुड़ाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है।**

इस विषय में सबसे भारी अध्ययन जिसका वित्त-पोषण विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किया गया था, वह वर्ष 2019 में दुनिया के एक अगुआ जर्नल में प्रकाशित हुई। हरियाली को स्वास्थ्य-निर्धारक, स्वास्थ्य में सुधार, और विभिन्न प्रसन्नता के लिये उपयोगी माना जाता रहा है। इस व्यवस्थित अध्ययन में विश्व भर के अनुदैर्ध्य अध्ययनों से प्राप्त प्रमाणों की इस बात के लिये समीक्षा की गयी कि हरियाली, पार्क्स, गार्डन्स आदि की उपलब्धता का सकल मृत्यु दर में प्रभाव क्या है। इस मेटा-एनालिसिसमें प्रारम्भ में 9298 अध्ययन और 13 अन्य अध्ययनों की पहचान की गयी। इनमें से 9234 (99 प्रतिशत) अध्ययनों को शीर्षक और सारांश जांचने के बाद अपग करते हुयेशेष 77 अध्ययनों में से 68 (88 प्रतिशत) को सम्मिलित किया गया। उक्त के साथ ही मात्रात्मक मूल्यांकन हेतु नौ (12 प्रतिशत) अध्ययनों को शामिल किया। इनमें सात देशों के 8.32 लाख व्यक्ति शामिल थे। कुल मिलाकर निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि आसपास की हरियाली और सकल-कारण मृत्यु दर के बीच एक व्युत्क्रम रिश्ते का प्रमाण पाया गया। कहने का तात्पर्य यह कि जैसे-जैसे हरियाली की उपस्थिति बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी आती जाती है। सन्देश यह है कि मानव समाज जहाँ रहता और काम करता है वहां हरियाली बढ़ाने और जैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना मानव स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है (देखें, डी. रोजसरुएडा आदि, द लैंसेटप्लेनेटरी हेल्थ, 3,11: ई 469-ई477, 2019)।

एक अन्य महत्वपूर्ण मेटा-एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न पर जांच की गयी कि गर्भावस्था में प्रतिकूल परिणामों पर आवासीय हरियाली का क्या प्रभाव रहता है। इसमें कुल 36 अध्ययन शामिल थे और कुल मिलाकर 1.19 करोड़ (11.9 मिलियन) प्रतिभागी थे। परिणाम स्पष्ट करते हैं कि हरियाली वाले स्थलों में जन्म के समय न्यूनतम वजन का जोखिम उच्च स्तर की हरियाली वाले समूह में काफी कम था। गर्भावधि उम्र कम रहने की संभावना भी उच्च हरियाली वाले क्षेत्रों में घटी पायी गयी। इसके अलावा अधिक हरियाली वाले क्षेत्रों में मातृ-जोखिम कम पाया गया और मानसिक विकारों में भी कमी पायी गयी। यह समीक्षा आवासीय हरियाली और गर्भावस्था के प्रतिकूल परिणामों के बीच एक उलटे रिश्ता होने की पुष्टि करती है। अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट कर देते हैं कि हरियाली गर्भवती महिलाओं के लिये जोखिम घटाती है (वाइ. झान आदि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 718: आर्ट. 137420, 2020)। हाल ही में वनानुभव को मानसिक स्वास्थ्य में बेहतरी लाने के ठोस प्रमाण मेटा-एनालिसिस से प्राप्त हुए हैं (देखें, वाई. कोटेरा इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड एडिक्शन, 20(1):337-361, 2022)। एक अन्य मेटा-एनालिसिस से सिद्ध होता है कि वनानुभव अवसाद व चिंता से बचाने हेतु श्रेष्ठ गैर-औषधीय युक्ति है (पी.एस. येओन इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(23): 2021)। रैंडमाइज्ड कंट्रोल्ड ट्रायल्स की मेटा-एनालिसिस का निष्कर्ष भी स्पष्ट करते हैं कि वन-आधारित गैर-औषधीय चिकित्सकीय दखल मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं (देखें, एम.जे. कांग इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 19(8): 2022)। हाल ही में 52 अध्ययनों में समाहित 5.2 मिलियन लोगों के आंकड़ों को लेकर की गई मेटा-एनालिसिस सिद्ध करती है कि ग्रीन-स्पेस के आसपास रहने वाले लोगों में डायास्टोलिक और सिस्टोलिक ब्लडप्रेशर में सुधार होता है (देखें, वाई. झाओ इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 817: 152513,2022)

हमारा समाज आज शहरीकरण, संसाधन-विदोहन और जीवनशैली में बदलाव के कारण प्रकृति-उन्मुखता से प्रकृति-विमुखता की ओर जा रहा है। संहिताओं, शोध और अनुभव की त्रिवेणी से उत्पन्न ज्ञान इस बात के पुख्ता प्रमाण दर्शित करता है कि प्रकृति-अनुभव मानव स्वास्थ्य के लिये अनिवार्य है। शोध स्पष्ट करती है कि प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य-लाभ के मूल में वायु गुणवत्ता, शारीरिक गतिविधि और व्यायाम, सामाजिक सामंजस्य और तनाव में कमी आदि कारक हैं।

इस तमाम चर्चा का मूल संदेश यह है कि पर्यावरण के साथ हमारे संबंध हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। वनानुभव और प्रकृति-अनुभव अनेक रूपों में हो सकता है। हमारे आसपास हरियाली को बढ़ावा देना, वनों उपवनों में घूमना, प्राकृतिक स्थलों में सैर-सपाटा, प्रतिदिन समीपवर्ती बाग-बगीचों में जाकर कम से कम एक घंटे का समय बिताना, कार्य-स्थलों में हरियाली बढाने के लिये छोटे-छोटे गार्डन या बगीची विकसित करना, बैठने के स्थान में खिड़की से दिखने वाला हरा-भरा दृश्य, कार्यालय में पांच मिनट का ब्रेक लेकर हरियाली में टहल कर आना आदिसब छोटे-छोटे ऐसे कार्य हैं, जिनके माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ जुड़ाव बना रहता है। इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह याद रखने योग्य है कि चूंकि प्रतिदिन व्यायाम और योग करना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है अतः व्यायाम और योग वनों, हरे-भरे स्थलों, बाग-बगीचों, नदी या झील के समीप किया जाये तो शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिये अधिक उपयोगी है। बच्चों को भी वनानुभव और प्रकृति-अनुभव कराइये। हरियाली से जुड़ाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है। जीवन के प्रारम्भिक काल में प्रकृति से जुड़ाव मानव और प्रकृति के मध्य आजीवन सार्थक रिश्ता बनाने हेतु आवश्यक है। प्रकृति के साथ जुड़े रहिये। योग और व्यायाम कीजिये। आनंदित रहिये। स्वस्थ रहिये।

**–अतिथि सम्पादक,**
**डॉ. दीप नारायण पाण्डेय**
**(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)**
**(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)**

## राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौ वर्ष....
# सत्ता के प्रत्येक केन्द्र पर स्थापित

रामनिवास बैरवा

सौ साल पहले का इतिहास बहुत लम्बा है। इसे इतिहासकार, ऐतिहासिक विरासतों के विश्लेषक, आलोचक, प्रत्यालोचक अपने-अपने दृष्टिकोण से लिखते हैं। कई विजेताओं का इतिहास लिखते हैं, कई पराजयों का इतिहास लिखते हैं, कोई पीड़ित होकर इतिहास लिखता है। पर है सभी इतिहास के अनिवार्य घटक। सौ साल पहले अंग्रेजों का राज था भारत पर। इस कारण जो पीड़ित रहे उन्हें आजादी चाहिए थी, जो पीड़ितों से पीड़ित रहे उन्हें भी आजादी चाहिए थी।

सौ साल पहले ही एक महायुद्ध हुआ था। उसी महायुद्ध के बीच एक व्यक्ति को भारत में भेजा गया इन सबके बीच समन्वय बैठाने के लिए। जनवरी, 1915 में उस व्यक्ति के आने के बाद सबसे पहले, बिखरे नेतृत्व करने वालों में अपनी पैठ बनाने के लिए, अपनी भागीदारी में अप्रैल, 1915 के हरिद्वार कुम्भ में "हिन्दु महासभा" का गठन किया गया। यह प्रयास सबको एक करने के लिए था।

उस दौर में पीड़ितों का नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक कर रहे थे, जो पीड़ितों से पीड़ितों के विरोधी थे। 1920 के नागपुर के कांग्रेस के अधिवेशन में उन्हें ही कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना था, लेकिन उस अधिवेशन के चार महिने पहले ही उनका देहान्त हो गया था और गांधीजी नेतृत्व की कसौटी पर आ गये जिस पर उन्हें खरा उतरकर नेतृत्व सम्भालना था। नागपुर के अधिवेशन की तैयारियों में आस-पास के युवक सक्रिय थे बाल गंगाधर तिलक से काफी प्रभावित थे, जिनका केशव राव हेडगवार भी सक्रिय नेतृत्व कर रहे थे। मंच पर कुर्सियों के पीछे बाल गंगाधर तिलक का बहुत बड़ा चित्र लगाया गया था जो कि कसौटी का पैमाना था मुसलमानों को अलग-थलग करने का। और ऐसा ही किया गया। उस अधिवेशन में अपेक्षाकृत अधिक सीनियर और विद्वान कांग्रेसी मोहम्मद अली जिन्ना को अपमानित करके हमेशा के लिए कांग्रेस से अलग कर दिया गया था। अब बचे हिन्दुओं को ही कांग्रेस की निर्बाघ बागडोर मिल गई थी।

बाल गंगाधर तिलक ने अपनी नीतियों और गतिविधियों को ब्रिटिश सत्ता में भागीदारी के समान दावेदार मुसलमानों के खिलाफ केंद्रित किया, दलित सत्ता में भागीदारी के दौर में नहीं थे। इसी बात को लेकर अंग्रेज सरकार ने सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानों की अलग पहचान को केंद्रित करके फूट डाली। इसी विभेदकारी नीति को आगे चलकर पूंजीवादी राष्ट्रों की कम्युनिस्ट-विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय नीति के लिए इस्तेमाल किया गया। इस नीति के अनुसरण में सावरकर की हिन्दू-स्वराज एवं गांधीजी की हिन्द-स्वराज की अवधारणायें पनपी। इसी अवधारणा को भारतीय समाज में धरातल पर उतारने का काम 1920 से भारतीय राजनीति में शुरू हो चुका था। कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में स्वयं सेवकों के रूप में काम करने वालों ने 1923 में "हुबली सेवा मंडल" जिसे 1924 में "हिन्दुस्तानी सेवा मंडल" नाम दिया गया, बनाया। 1924 में बेलगाम के कांग्रेस अधिवेशन में गांधीजी कांग्रेस अध्यक्ष बनाये गये तब "हिन्दुस्तानी सेवा मंडल" का नाम "कांग्रेस सेवा दल" करके जवाहर लाल नेहरू को उसका अध्यक्ष बना दिया गया था।

हेडगवार वगैरह को नये लड़के नेहरू के अधीन काम करने और "कांग्रेस सेवा दल" से अपने उद्देश्यों की पूर्ति की आशा नहीं थी अतः गांधीजी से सलाह मशवरा करके एक अलग हिन्दू संगठन बनाने का विचार किया गया। लेकिन हिन्दू नाम हिन्दू महासभा पहले से ही थी, अतः कोई अन्य नाम पर विचार आवश्यक था। तब स्वयं सेवक के साथ राष्ट्रीय शब्द जोड़कर "राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ" नाम दिया गया। चूंकि तब तक सावरकर अंडमान से भारत में आ चुके थे और 1923 में "हिन्दुत्व के आवश्यक तत्व" प्रकाशित की जिसमें अब तक उनके द्वारा प्रयुक्त किये जा रहे शब्द 'भारतीय' के बदले 'हिन्दुत्व' शब्द को काम में लिया गया। यह भी ध्यान देने की बात है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में अनुशासित, आज्ञाकारी ही प्रमुखता पाते रहे हैं लेकिन सिद्धांतकार कोई भी नहीं हुआ, सिवाय दामोदर सावरकर के।

इस प्रकार कांग्रेस की कोख से जन्मी आर.एस.एस. के प्रमुख सिद्धांतकार सावरकर ही स्थापित है। गांधीजी की बाध्यता थी कि राजनीतिक कारणों से उन्होंने जवाहर लाल नेहरू को आगे किया, क्योंकि नेहरू अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अनुरूप छदम् समाजवाद से कम्युनिस्टों को भ्रमित कर सकते थे, और किया भी जिसकी वजह से आर.एस.एस. भी सावरकर को किसी पद पर नहीं ला सकी। सावरकर अपनी वरिष्ठता के स्व-आग्रह के कारण सामान्य या सहायक बनकर नहीं रहना चाहते थे। इसीलिए, अवसर मिलते ही हिन्दु महासभा का अध्यक्ष पद लिया।

"डिस्कवरी ऑफ इण्डिया" लिखने वाले नेहरू को तो प्रधानमंत्री पद मिला लेकिन वे प्रतिद्वंद्वी सावरकर को प्रतिबंधित करना नहीं भूले। "डिस्कवरी ऑफ इण्डिया" के जवाब में सावरकर ने "भारतीय इतिहास के छः सुनहरे खण्ड" 1963 में प्रकाशित करवाई। जिसमें उसने हिन्दुओं को पीड़ित-प्रताड़ित साबित किया। और उनकी मुक्ति के आक्रामक आख्यानों को हिन्दुओं की मुक्ति का मार्ग बताया। यही अन्ततः आर.एस.एस. के आगे के वर्षों में उसका मार्गदर्शक रहा है।

इसी स्थिति के परिप्रेक्ष्य में 1965 में लाल बहादुर शास्त्री के समय में सावरकर को नियमित पेंशन दी जाने लगी, इंदिरा गांधी ने उन पर डाक टिकिट जारी किया और बाद में भारतीय जनता पार्टी के सरकार बनाने पर सावरकर को गांधीजी के समकक्ष स्थापित करने का उद्यम चलाया जा रहा है क्योंकि अब आर.एस.एस. सत्ता के हरेक केंद्र में स्थापित हो चुकी है। इस प्रकार से आर. एस.एस. के सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं।

**- रामनिवास बैरवा,**
**पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त**

# विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह: औपनिवेशिक विरासत से आधुनिक प्रासंगिकता तक

प्रो. अशोक कुमार

प्रो. गौरहरि बेहेरा

दीक्षांत समारोह, जो एक छात्र के शैक्षणिक जीवन का गौरवपूर्ण समापन होता है, आज अपनी प्रासंगिकता और उद्देश्य को लेकर गंभीर सवालों के घेरे में है। ये समारोह केवल एक डिग्री प्रदान करने की औपचारिकता मात्र नहीं, बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली की गहरी समस्याओं, उसकी औपनिवेशिक जड़ों और सामंती मानसिकता का प्रतीक बन गए हैं। इस बहस के दो मुख्य आयाम हैं: पहला, इन समारोहों की आंतरिक बनावट और उद्देश्य; और दूसरा, इनका आयोजन स्थल – विश्वविद्यालय परिसर अथवा अन्यत्र कोई स्थान।

**औपनिवेशिक विरासत और सतही भारतीयकरण** – आधुनिक काल में विश्वविद्यालयों में आयोजित दीक्षांत समारोहों की जड़ें मध्ययुगीन यूरोपीय विश्वविद्यालयों से जुड़ी हैं, जहाँ शिक्षा मुख्य रूप से धार्मिक ग्रंथों पर आधारित थी। इसके विपरीत प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरुकुलों में प्रदत्त शिक्षा प्रणाली के अनुरूप विद्यार्थी की शिक्षा पूर्ण होने के उपरांत समावर्तन अथवा स्नातक संस्कार आयोजित किए जाते थे। इस संस्कार में शिष्य को स्नान करवाने के पश्चात् नवीन वस्त्र धारण करने का नियम था जो विद्यार्थी जीवन से गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने का प्रतीक माना जाता था। अंत में गुरु अपने शिष्यों को उनके कर्तव्य एवं दायित्वों के निर्वहन हेतु एक उपदेश देते थे तत्पश्चात् गुरु दक्षिणा भेंट करते हुए इसका समापन किया जाता था। परंतु वर्तमान में इन समारोहों में धारण किए जाने वाले गाउन, जुलूस और उपाधियाँ दिए जाने की रीति सीधे तौर पर उस औपनिवेशिक काल की देन हैं, जब ब्रिटिश शासन ने भारत में अपनी शिक्षा प्रणाली स्थापित की थी।

आज, भारतीय विश्वविद्यालयों ने इस विरासत को भारतीय बनाने का प्रयास किया है, लेकिन यह बदलाव केवल सतही स्तर पर ही संभव हो पाया है। गाउन को भारतीय पोशाक से बदलना या संस्कृत के श्लोकों को शामिल करना इसके मूल स्वरूप को नहीं बदलता। यह एक सतही बदलाव है जो पारंपरिक औपनिवेशिक ढांचे को ही मजबूत करता है। यह दिखावा करता है कि हमने अपनी पहचान को अपनाया है, जबकि हम अभी भी उसी पुराने, थोपे गए मॉडल पर चल रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, दीक्षांत समारोहों में इस्तेमाल की जाने वाली अनेक शब्दावलियां जैसे–'आदेश,' 'प्रतिज्ञा,' और 'देवता' एक ऐसे पदानुक्रम को दर्शाते हैं जो आज के लोकतांत्रिक और समतावादी समाज की भावना के बिल्कुल विपरीत होकर एक सामंतवादी व्यवस्था व दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। ऐसे शब्द एवं इस प्रकार की भाषा का प्रयोग छात्रों को स्वतंत्र विचारक के बजाय आज्ञाकारी अनुयायियों के रूप में प्रस्तुत करती है, जो आधुनिक शिक्षा के सहयोगात्मक उद्देश्य के नितांत प्रतिकूल है।

**मूल उद्देश्य से भटकाव**

एक समय था जब कुछ विश्वविद्यालयों में दीक्षांत सप्ताह ज्ञान के आदान-प्रदान, विचार-विमर्श का मंच होता था, जहाँ ख्यातिलब्ध विद्वान और कलाकार एकत्रित होते थे। आज, प्रायः वित्तीय संसाधनों के अभाव के कारण यह अपना महत्व खो चुका है और केवल एक नीरस औपचारिकता बनकर रह गया है। दुखःद बात यह है कि कई मामलों में, ये समारोह अपनी मूल भावना से विमुख होकर प्रमुख विचारधाराओं से प्रभावित होने लगे हैं। यह दशा शिक्षा के आधारभूत सवालों व उद्देश्य से ध्यान भटकाने का कार्य करती है जो कि एक शुभ संकेत नहीं है।

**आयोजन स्थल: परिसर अथवा अन्यत्र** : इस वैचारिक बहस के साथ-साथ, एक व्यावहारिक मुद्दा भी है जो इन समारोहों के आयोजन हेतु स्थल के चुनाव से जुड़ा है।

विश्वविद्यालय परिसर के बाहर: सुविधा और भव्यता की तलाश – आजकल कई बड़े विश्वविद्यालयों में पर्याप्त जगह की कमी के कारण बाहरी कन्वेंशन सेंटर या स्टेडियम का उपयोग करना एक व्यावहारिक विकल्प बन गया है। इसके लाभ स्पष्ट हैं:–

विस्तृत स्थान और सुदृढ़ व्यवस्था – विशाल भीड़ को संभालने, पार्किंग और सुरक्षा के लिए ये स्थान अधिक सुविधाजनक होते हैं।

मौसम से बचाव: बंद ऑडिटोरियम मौसम की अनिश्चितताओं से बचाते हैं।

प्रतिष्ठा और भव्यता: परिसर के अतिरिक्त किसी लोकप्रिय स्थल पर आयोजन से विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ सकती है।

**परिसर के अंदर: भावनात्मक जुड़ाव का प्रश्न**

हालांकि, परिसर के बाहर आयोजन में अनेक चुनौतियां एवं कमियां भी हैं। इनमें सबसे बड़ी कमी है भावनात्मक जुड़ाव। दीक्षांत समारोह का मुख्य उद्देश्य छात्र को उस स्थान से विदा करना है जहाँ उसने अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष बिताए हैं।

**परिसर के भीतर आयोजन:** कम लागत: बाहरी स्थानों को किराए ार लेने में भारी खर्च आता है, जिसका उपयोग छात्रों की शिक्षा को सुचारू बनाने में बेहतर तरीके से किया जा सकता है।

भावनात्मक बंधन: यह छात्रों को अपने दोस्तों और शिक्षकों के साथ उन स्थानों पर तस्वीरें लेने का मौका देता है जहाँ उन्होंने शिक्षा ग्रहण की है और जिससे एक अविस्मरणीय स्मृति और अनुभव जुड़ा होता है।

पहचान और संस्कृति: विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह उसकी पहचान और संस्कृति का अभिन्न अंग होता है। इसे परिसर से बाहर ले जाना इस भावना को कमज़ोर करता है।

**निष्कर्ष: एक नए और प्रासंगिक दृष्टिकोण की ओर** : दीक्षांत समारोह को परिसर के भीतर आयोजित करना सबसे बेहतर माना जाता है, क्योंकि यह छात्रों और विश्वविद्यालय के बीच के भावनात्मक बंधन को मजबूत करता है। लेकिन भव्यता के पीछे भागने और अनावश्यक खर्च करने के बजाय, हमें समारोह के मूल उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

दीक्षांत समारोह सिर्फ डिग्री देने की औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह हमारी शिक्षा प्रणाली में व्याप्त गहरी समस्याओं का एक प्रतीक है। यह समय है कि हम दीक्षांत समारोह की पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़कर एक नई और अधिक प्रासंगिक प्रणाली की ओर बढ़ें। हमें ऐसे विकल्प तलाशने चाहिएं जो छात्रों की बौद्धिक और रचनात्मक उपलब्धियों को सही मायने में सराहें, और जो आधुनिक भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप हों। यह बहस सिर्फ एक स्थान या किसी समारोह तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा के भविष्य और उसके सही उद्देश्य को परिभाषित करने के विषय में है।

**–अशोक कुमार,**
**पूर्व कुलपति, कानपुर एवं गोरखपुर विवि.; पूर्व विभागाध्यक्ष, राज. वि.वि., जयपुर।**
**और प्रोफ़ेसर गौरहरि बेहेरा**
**अंग्रेज़ी विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर**

# रॉयल्टी ठेकेदार की मनमानी से व्यापारी परेशान

**बयाना/भरतपुर,** (निसं)। बयाना क्षेत्र में पत्थर कारोबार से जुड़े व्यापारियों की समस्याएं खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं। हाल ही में 23 दिन लंबी हड़ताल के बाद व्यापारियों और रॉयल्टी ठेकेदार के बीच जो समझौता हुआ था, वह अब बेअसर होता नजर आ रहा है। ठेकेदार की मनमानी से व्यापारियों को एक बार फिर परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बयाना औद्योगिक समिति के अध्यक्ष दिनेश सूपा ने बताया कि बयाना और पहाड़पुर क्षेत्र से निकलने वाला पत्थर इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाता है। हड़ताल के बाद हुई वार्ता में कुछ अहम मुद्दों पर सहमति बनी थी, लेकिन अब फिर से उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने इसे गंभीर चिंता का विषय बताया। इस मुद्दे पर कांग्रेस जिला महासचिव योगेश सिंघल ने भी कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का गृह जिला होने के बावजूद बयाना-पहाड़पुर क्षेत्र के व्यापारी रॉयल्टी ठेकेदार की मनमानी से त्रस्त हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री को स्वयं हस्तक्षेप कर व्यापारियों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करना चाहिए। व्यापारियों ने औद्योगिक समिति के नेतृत्व में जिला प्रशासन से भी मुलाकात की, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। व्यापारियों का कहना है कि अगर जल्द समाधान नहीं हुआ, तो वे फिर से आंदोलन की राह पर जाने को मजबूर होंगे।

## राशिफल रविवार 31 अगस्त, 2025

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, अनुराधा नक्षत्र सायं 5:27 तक, वैधृति योग दिन 3:59 तक, विष्टि करण दिन 11:52 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा दिन 11:52 तक है। आज दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, श्री दाधिच जयन्ती है। आज से महालक्ष्मी व्रत आरम्भ होगा। आज वैधृति पुण्य है। आज मेला भतृहरि 3 दिन का अलवर में है।

**श्रेष्ठ चौघड़ियाः** चर 7:44 से 9:18 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:27 तक, शुभ 2:02 से 3:36 तक।

**राहूकालः** 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:45

**मेष**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। शुभ कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**वृष**
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

**मिथुन**
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

**कर्क**
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

**सिंह**
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं।

**कन्या**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

**तुला**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आज शुभ-मांगलिक कार्य से संबंधित यात्रा संभव है।

**वृश्चिक**
मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। मनः स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

**धनु**
आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

**मकर**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**कुंभ**
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

**मीन**
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज शुभ-धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।